

होरी गीत

1

(सुमिरन)

सुमिरो में सिरी भगवान, आहे लाल, सुमिरो में सिरी भगवान
आहे, जेहि सुमिरत सभ काज बनतु हैं ॥ टेक॥

पुरूब में सुमिरिला उगत सुरूज के, पच्छिम सुमिरि सुबहान,
उत्तर में सुमिरिला मातु गंगा के, दखिन में बीर हनुमान
निचवा सुमिरिला धरती मइया के, उपरा सुमिरी भगवान ॥ टेक॥

गया में सुमिरो गजाधर नाथ के, कासी बिसेसर नाथ
जेहि सुमिरत सभ काम बनतु है, सुमिरो में सिरी भगवान ॥ टेक॥

2

सरजू तट राम खेलत होरी ॥ टेक॥

दउरि-दउरि फिचुकारी चलावे, अबीर, गुलाल भरे झोरी।
भीर अपार सखिन की सुन्दरी, कोई साँवरि कोई गोरी॥

सखिन-सखिन मिलि फाग रचो है, भाग सखा सब मुख मोरी।
मधुर लता हारे रघुनन्दन, जाय सिया ढिग कर जोरी॥

महुआ (6)

बंगला में उड़ेला अबीर

आहोऽ लालऽ, बंगला में उड़ेला अबीर

बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर

बंगला में उड़ेला अबीर

हो बाबू ऽऽ, आहो ऽ बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर

बंगला में उड़ेला अबीर

एक बंगला छोड़ले, दूसर बंगला छोड़ले

तीसरे में उड़ेला अबीर

आहोऽ लालऽ, बंगला में उड़ेला अबीर

अभ्यास

1. होरी में कवन-कवन वाद्य यंत्र बाजेला? पता करीं।
2. होरी गीत के सामूहिक गायन करीं।
3. अपना होरी मनवला के अनुभव लिखीं।

शब्द-भंडार

सुमिरो	-	प्रार्थना कइल
मातु	-	माता/मईया
सभ	-	सब
दउरि-दउरि	-	दौड़-दौड़ के

मटकोरा के गीत

1

कवना बने रहलू ए कोइलर

कवना बने जास

केकरा दुअरवा ए कोइलर

उछहल जास

नंदन बने रहलू ए कोइलर

बिरिनदा बने जास

कवना देव दुअरवा ए कोइलर

उछहल जास

2

कहवाँ के पीअर माटी

कहवाँ के कुदार हे!

कहवाँ के पाँच सोहागिन

माटी कोड़े जास हे!

जनकपुर² के पीअर माटी

सोना के कुदार हे!

जनकपुर³ के पाँच सोहागिन

माटी कोड़े जास हे!

1. कवन के जगे वर के नाँव गावल जाला।

2/3. जनकपुर के जगे वर भा कनिया के गाँव के नाँव लिआला।

अभ्यास

1. बियाह में होखे वाला मटकोर का नेग के बारे में पता करीं।
2. माटी के कोड़े ला? पता क के लिखीं।
3. मटकोर में सोहागिन लोग कवना दिशा में जाके माटी कोड़ेली?

दुआर पूजा के गीत

आपन खोरिया बहार हो अनजान बाबा,

आवत बाड़े दुलरू दामाद।

बइठे के माँगे दुलहा लाल गलइचा,

लड़े के माँगे मैदान।

खाए के माँगे दुलहा, पुड़िया मिठइया,

पीये के माँगे रसधार।

कचरे के माँगे दुलहा, मगही जे पनवा,

थुकहीं के माँगे पीकदान।

अभ्यास

1. बियाह में दुआर पूजा के नेग के बारे में बिस्तार से पता करीं।
2. केहू के बियाह के दुआर पूजा के अँख देखल हाल लिखीं।

गुरहत्थी के गीत

1

अइसन सूनर भँसुरू के, कइसे देवों गारी रे।
सिया जोगे ले अइले, कुसुम रँग सारी रे।
पहिरेली सिया मोर, हुलसेला जिया रे ॥1॥

अइसन सूनर भँसुरू के, कइसे देवों गारी रे।
सिया जोगे ले अइले, नथिया बड़ भारी रे।
पहिरेली सिया मोर, हुलसेला हिया रे ॥2॥

अइसन सूनरे भँसुरू के, कइसे देवों गारी रे।
सिया जोगे ले अइले, हँसुली बड़ भारी रे।
पहिरेली सिया मोर, हुलसेला हिया रे ॥3॥

अइसन सूनर भँसुरू के, कइसे देवों गारी रे।
सिया जोगे ले अइले, कंठा बड़ भारी रे।
पहिरेली सिया मोर, हुलसेला हिया रे ॥4॥

आजु के दिन भँसुरू छूवत बाड़े, भवहि निरखेत बाड़े ।
 टिकवा ले गुरहथत बाड़े, आपन ले अपनावत बाड़े ।
 आजु के दिन, भसुर छूवत बाड़े ॥१॥

ओरी तर ओरी रे तर बइठे बरनेतीया,
 काढ़ ना अनजान हो बाबा अपनी पुतरिया।
 का हम काढ़ों ए समधी अपनी पुतरिया।
 हमरो अनजान हो बेटी आँख के रे पुतरिया।
 दिनवा हरेलू ए बेटी भुखिया पियसिया।
 रतिया हरेलू ए बेटी बाबा आँख रे निनिया।
 का हम काढ़ों ए समधी अपनी रे पुतरिया।
 सजन लोगवा ए समधी गिरेला मुरछइया।

अभ्यास

1. गुरहत्थी के नेग के बारे में पता क के लिखीं।
2. बिआह के अवसर पर गवाए वाला एगो दोसर गीत लिखीं।

!!!

शब्द भंडार

सूनर	- सुघर, सुन्दर
भँसुर	- पति के बड़ भाई
पहिरेली	- पेन्हेली
हुलसेला	- उमंग से भरेला, आनंदित होला
नथिया	- नाक में पहिरे वाला एगो गहना
हँसुली	- गर्दन में पहिरे वाला एगो चन्द्राकार गहना
कंठा	- गर्दन में पेन्हेवाला गोल-गोल दाना के एगो गहना

अभ्यास

1. बिआह में गुरहत्थी के करेला ?
2. गुरहत्थी के रस्म पर प्रकाश डालीं ।
3. कनेया निरीक्षण के बिआह में का महत्व बा ? लिखीं ।
4. कन्या निरीक्षण के कवनो अउरी गीत लिखीं ।

शब्द भंडार

छूवत बाड़े	- स्पर्श कर रहल बाड़े ।
भवहि	- छोट भाई के पत्नी ।
निरेखत	- देखत
गुरहत्थी	- बिआह के एगो रस्म, जेवना में दुल्हा के बड़ भाई दुल्हन के छू के निरीक्षण क के नया वस्त्र आ गहना देलन ।

कनेयादान के गीत

मँड़वा के बाँस धइले रोवेले अनजान बाबा,
हाथे रूमाल मुखे पान।
ई धिया समधी के करा के सऊँपी,
के ही करी प्रतिपाल।।

मँड़वा के बाँस धइले हँसेले अनजान समधी,
हाथे रूमाल मुखे पान।
ई धिया समधी हमरा के सऊँपी,
हमहीं करब प्रतिपाल।।

मँड़वा के बाँस धइले रोवेले अनजान भइया
हाथे रूमाल मुखे पान।
ई बहिना हम केकरा के सऊँपी,
केही करी प्रतिपाल।।

मँड़वा के बाँस धइले हँसेले अनजान दुल्हा,
हाथे रूमाल मुखे पान।
ई बहिना सारे हमरा के सऊँपी,
हमहीं करब प्रतिपाल।।

अभ्यास

1. कनेयादान के बेरा कं दू गो आऊर गीत लिखीं।
2. कनेयादान के बेरा होखे वाला नेग के बारे में पता करीं।

पतोहि के परिछावन गीत

सोना के सिन्होरवा लेले, अम्माँ मोर ठाढ़ हो ।
खोलऽ बबुआ पालकी के पटरी, मँगिया बहोरीं हो ॥1॥
कइसे में खोली अम्माँ, पालकी के पटरी हो ।
मोरा गोदे बाड़ी अम्माँ, धनिया नादान हो ॥2॥
सोने के सिन्होरवा लेले, भउजी मोर ठाढ़ हो ।
खोलऽ बबुआ पालकी के पटरी, मँगिया बहोरीं हो ॥3॥
कइसे में खोलीं भउजी, पालकी के पटरी हो ।
मोरा गोदे बाड़ी भउजी, धनिया नादान हो ॥4॥
सोने के सिन्होरवा लेले, फूआ मोर ठाढ़ हो ।
खोलऽ बबुआ पालकी के पटरी, मँगिया बहोरीं हो ॥5॥
कइसे में खोलीं फूआ, पालकी के पटरी हो ।
मोरा गोदी बाड़ी फूआ, धनिया नादान हो ॥6॥
सोने के सिन्होरवा लेले, दीदी मोर ठाढ़ हो ।
खोलऽ बबुआ पालकी के पटरी, मँगिया बहोरीं हो ॥7॥
कइसे में खोलीं दिदिया, पालकी के पटरी हो ।
मोरा गोदी बाड़ी दिदिया, धनिया नादान हो ॥8॥

शब्द-भंडार

सिन्होरेवा	-सिन्दूर रखे के पात्र, सिन्होरा
पटरी	-पालकी के दरवाजा
माँगिया बहोरी	-माँग में सिन्दुर लगावल
भउजी	-बड़ भाई के पत्नी
दिदिया	-बड़ बहिन

अभ्यास

1. पाद्य-पुस्तक में दिहल ई गीत बिआह के कवन नेग में गावल जाला? पता करीं।
2. बिआह में 'सिन्होरा' वर पक्ष से आवेला कि कन्या पक्ष से?
3. पालकी के बारे में पता करीं।